

विचार शक्तियों शताब्दियों से कविता का सहारा ले रही हैं। 'कवि' मानविक कल्पनाओं का सम्राट् है, शब्दों का स्वामी, भागी दर्शक, समृद्ध अनुपम जिसने अस्तित्व को समझा है, और कुछ ही शब्दों में तत्त्विक अनुभवों और और अहसासों को रूपायित किया है। देश में कविता का प्रेम तो हमें बचपन से ही मिला है, जीवित परम्परा की बहुभुज सम्पत्ति की तरह। और आज भी मेरे लिये परदेस में हिन्दी कविता पढ़ना या संगीत सुनना एक सुखद अनुभूति है।

■

क्या आज मैं पूछूँगा अतिथि कवि से, कुछ प्रश्न, उन समस्याओं के बारे में जिनका मेरे पास जवाब नहीं, उन हिन्दी शब्दों का अर्थ, वे दोहे जिन्हें मैं भूल सा रहा हूँ, पर जिनकी गूँज अभी तक अविकल है। क्या वे कुछ बताएंगे इस असफल चित्र को देखकर कि कविता लिखने में वही निराशा, वही पीड़ा, वही सुख है और उन्हीं स्वतंत्रों का सामना करना पड़ता है। क्या मैं कड़ूँगा कि चित्रकार 'गूँगा' होता है, क्या वे जवाब देंगे कि कवि 'अन्ध' होता है, अन्तरज्योति के बावजूद। सालों सक्रिय होते हुए भी मैं कुछ नहीं समझ सका हूँ कि कैसे, किस जुनून में चित्र बनते हैं, चित्रकला क्या है। अगर एक ऐसा दिन आये और मुझे यह समझ मिल सके तो शायद मैं चित्र बना ही न सकूँगा। एक संगीतज्ञ की तरह मैं अपने उन चित्रों के बारे में जहाँ "चित्रता" संपूर्ण हो सकी है, केवल यही कड़ूँगा "यह भगवान की कृपा है।" इलोरा की गुफाओं में एक शिल्पकार ने बड़ी दान शक्ति से लिखा है:

"एतन्मया कृतम हो कृत मित्यकस्मात्"

"एतन्मया"

■

नहीं, बहरत यही है, मैं कुछ नहीं पूछूँगा। कला के बारे में प्रश्न आक्रमण के समान लगते हैं। हमारे व्यक्तिगत, गुप्त और एकान्त क्षेत्रों में जहाँ हम कुछ न पहुँच सके, जिनकी अभी तक हमें कुछ पहचान नहीं है, हम दर्शकों को किस तरह ले जा सकेंगे। हम किस तरह समझाएँ उन समस्याओं को जिन्हें हम कुछ नहीं समझ पाते। ये बातें तो इरफ़ानियों की महफ़िलों में ही बड़ी शान से हो सकती हैं आलोचकों और संगीक्षकों के बीच। मैं विनयशील होकर यही कड़ूँगा: "मेरे लिये सक्रिय रहना ही काफी है।"

■